जैन चित्र कथा
तीन दिन में

जैन चित्रकथा आपके बच्चे को जैन संस्कृति से परिचित कराती है। इस पुस्तक की कथा संस्कृत सुकमाल चरित्र पर आधारित है। अनेक विद्वानों की राय में यह कहानी प्रतीकात्मक है। आज इस बात की जरूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उनपर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके समक्ष रखना जरूरी है, जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और जिन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिलसके कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं जीवन से जुड़ी हुई मालूम हो और आसानी से समझ में आ जाये। मुझे आशा है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस प्रयास को पसन्द किया जावेगा इस पर अमल किया जावेगा और इसका प्रचार किया जावेगा। यह प्रथम प्रकाशन 'तीन दिन में' सुधी पाठकों के हाथों सौंप रहे हैं।

प्रकाशक : आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थमाला, जयपुर

सम्पादक : धर्मचंद शास्त्री

लेखक : डा॰ मूलचंद जैन, मुजफ्फर नगर

चित्रकार : बनेसिंह, जयपुर

श्रीमति वसन्ती देवी, धर्मपत्नी स्व॰ श्री महावीर सहाय बैराठी, जयपुर के सौजन्य से

प्रकाशन वर्ष : १९८६ अंक : १ मूल्य : 10.00 रू॰

जब जागो तभी सबेरा। सुकुमाल-शरीर से अत्यन्त कोमल, पूरी आयु भोगों में व्यतीत हुई। जब आयु के तीन दिन शेष रहे तभी अवसर मिला-.... मुनि वचन सुनने व मुनि दर्शन करने का। और बस निकल पड़े आत्म-कल्याण के पथ पर। ध्यानस्थ हो गये। महान उपसर्ग हुआ। स्यालनी उनके शरीर का भक्षण करने लगी और वह आत्म चिन्तन में लीन। समाधि-पूर्वक प्राण त्याग किया और बन गये अहमिन्द्र सर्वार्थसिद्धि में।

देखिये कहां तो सुकुमाल भोगों में मस्त और कहां कठिन तपश्चरण। सब कुछ सम्भव है, बस केवल दृष्टि बदलने की आवश्यकता है। बाह्य से अन्तर की ओर दृष्टि कीजिये और देखिये काम कैसे नहीं बनता।

बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुध ले। जो हमारी आपकी बीत गई, उसका विचार न कीजिये। बस आज ही लग जाइये आत्म-कल्याण में। अभी भी देर नहीं हुई है। सुकुमाल तो केवल तीन दिन में ही कहीं से कहीं पहुंच गये। जैन कथाओं में सुकुमाल मुनि का विशेष स्थान है। आइये इसे पढ़ें और कुछ प्रेरणा लें इससे।

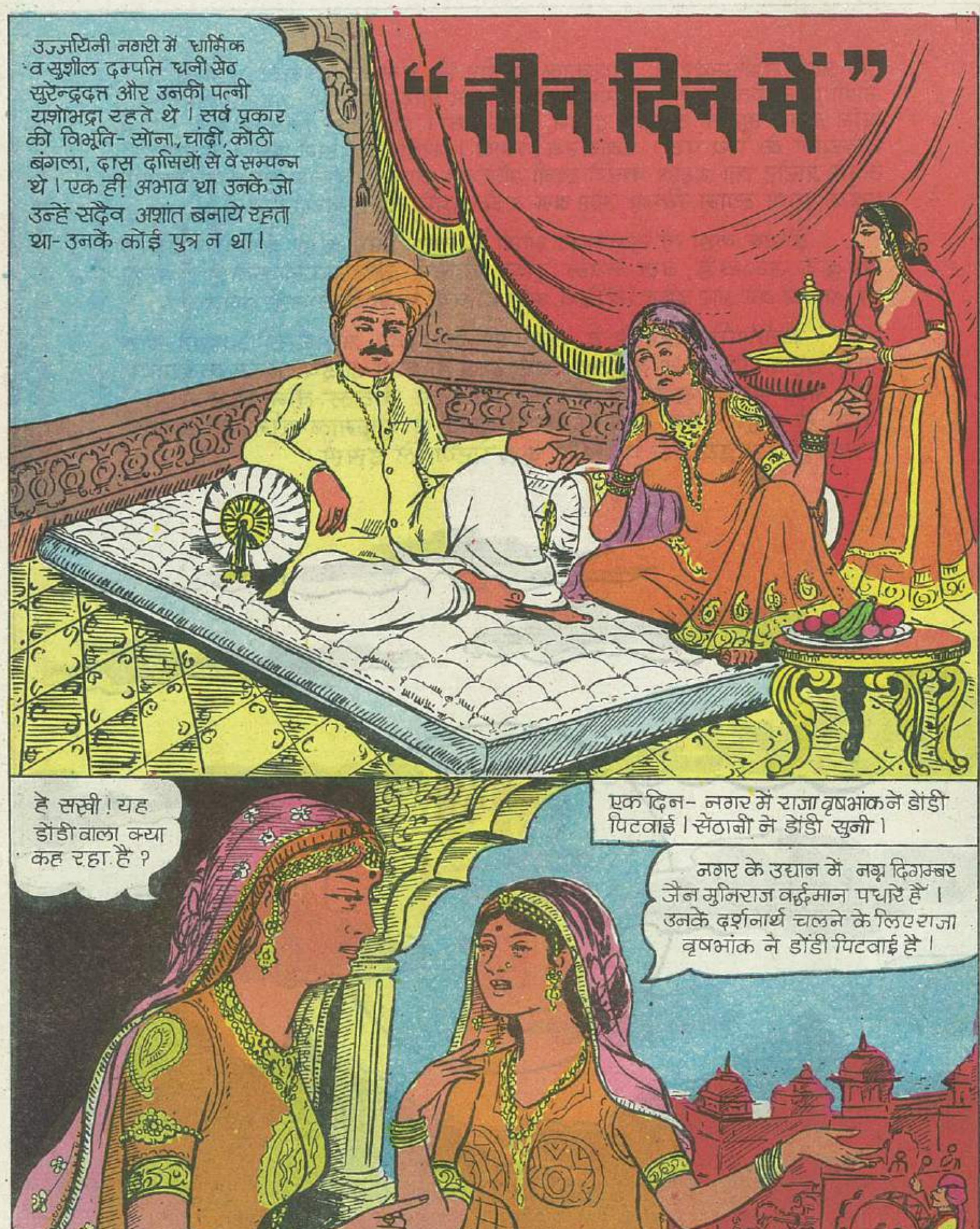
"तीन दिन में"
उज्जयिनी नगरी में धार्मिक व सुशील दम्पत्ति धनी सेठ सुरेन्द्रदत्त और उनकी पत्नी यशोभद्रा रहते थे। सर्व प्रकार की विभूति- सोना, चांदी, कोठी बंगला, दास दासियों से वे सम्पन्न थे। एक ही अभाव था उनके जो उन्हें सदैव अशांत बनाये रहता था- उनके कोई पुत्र न था।
एक दिन- नगर में राजा वृषभांक ने डोंडी पिटवाई। सेठानी ने डोंडी सुनी।
हे सखी! यह डोंडी वाला क्या कह रहा है?
नगर के उद्यान में नग्न दिगम्बर जैन मुनिराज वर्द्धमान पधारे हैं। उनके दर्शनार्थ चलने के लिए राजा वृषभांक ने डोंडी पिटवाई है।

नगरोद्यान में
हे महात्मन। मैं बहुत दुखी हूं। कृपया बतलाइये कि मेरे पुत्र होगा या नहीं ?
भद्रे। तेरे पुत्र अवश्य होगा, और वह भी बड़ा भाग्यशाली, सुन्दर, गुणवान, जगत में मान्य. परन्तु....
पुत्र का मुख देखते ही तेरा पति संसार, शरीर, भोगों से विरक्त होकर तपोवन में जाकर निर्ग्रन्थ मुनि दीक्षा ले लेगा। और तेरा पुत्र भी जब किसी मुनिराज के दर्शन कर लेगा तथा उनके वचन सुन लेगा उसी दिन वह भी घर गृहस्थी का त्याग कर देगा।
....परन्तु क्या महाराज ?

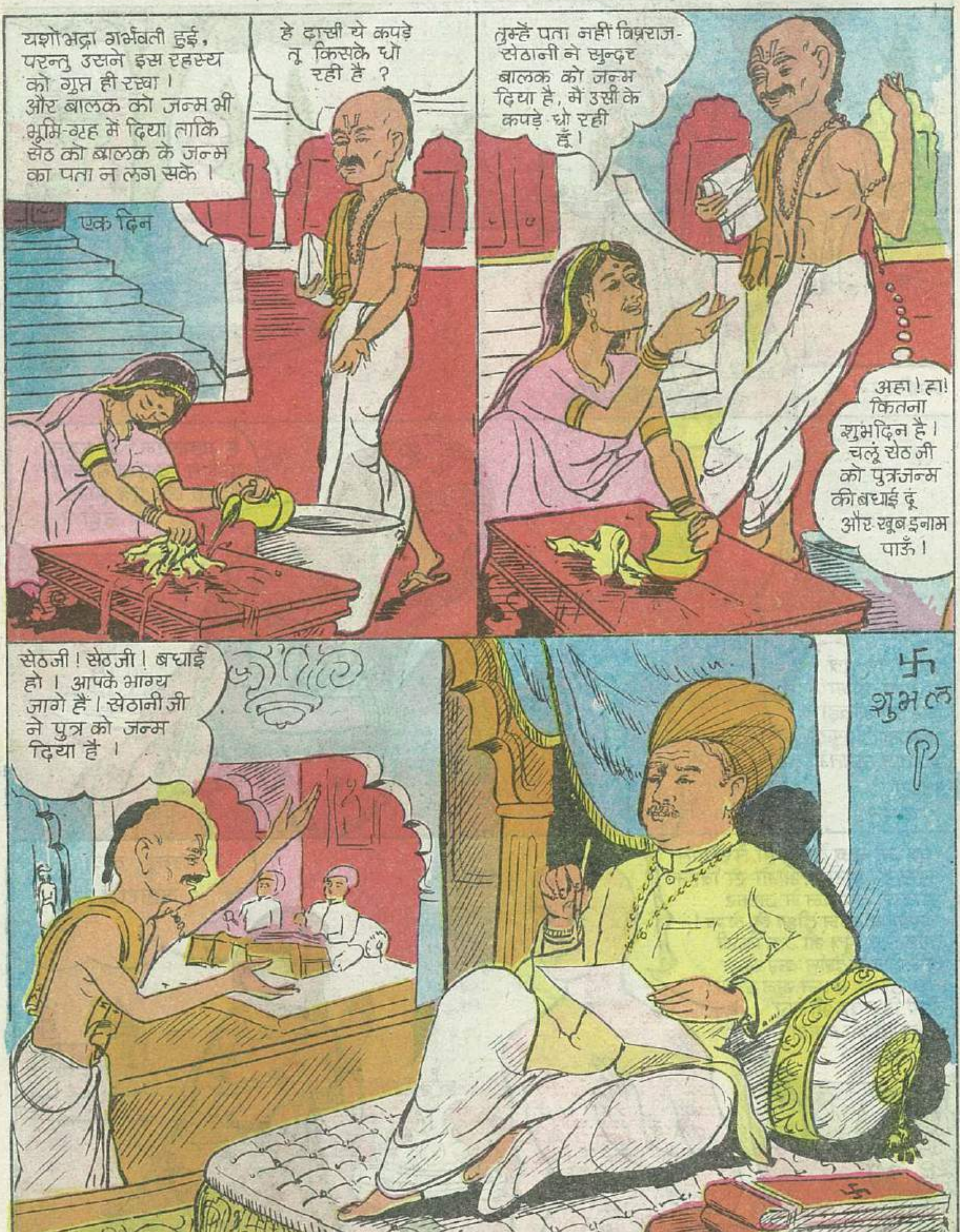
यशोभद्रा गर्भवती हुई, परन्तु उसने इस रहस्य को गुप्त ही रखा। और बालक को जन्म भी भूमि-ग्रह में दिया ताकि सेठ को बालक के जन्म का पता न लग सके।
एक दिन
हे दासी ये कपड़े तू किसके धो रही है ?
तुम्हें पता नहीं विप्रराज-सेठानी ने सुन्दर बालक को जन्म दिया है, मैं उसी के कपड़े धो रही हूँ।
अहा! हा! कितना शुभ दिन है। चलूं सेठ जी को पुत्रजन्म की बधाई दूं और खूब इनाम पाऊँ।
सेठजी! सेठजी! बधाई हो। आपके भाग्य जागे हैं। सेठानी जी ने पुत्र को जन्म दिया है।
शुभ ल

अच्छा ! यह बात है। चलता हूँ बालक का मुंह देखने लो विप्रराज - यह आपका इनाम
सेठानी के महल में : सेठानी तू बड़ी भाग्यशाली है, तेरे पुत्र हुआ है बधाई है तुझे। अच्छा हम चलते हैं मुनि दीक्षा लेने।
महात्मन ! मुझे संसार से डर लगा है। कृपया मुझे वह दीक्षा दीजिये जिससे मुझे सच्चे सुख की प्राप्ति हो।
बड़ा सुन्दर सोचा है भव्य तेरा कल्याण हो
सेठ सुरेन्द्रदत्त अब सेठ नहीं रहे। वह नग्न दिगम्बर साधु बन गये।

और उधर – सेठानी यशोभद्रा पुत्र जन्मोत्सव मना रही हैं ।
बालक का नाम रखा गया सुकुमाल बालक्रीड़ा देख देख माता यशोभद्रा फूली नहीं समा रही है ।
कितनी भाग्यशाली हूँ मैं । परन्तु मुझे ऐसा प्रबन्ध अवश्य करना चाहिए कि मेरा सुकुमाल किसी मुनिराज के दर्शन न कर सके ।
सेठानी ने एक बहुत सुन्दर 'सर्वतोभद्र' महल तैयार कराया उसके चारों ओर ३२ और महल बनवाये । और इन महलों के चारों ओर द्वारपाल नियुक्त कर दिये ।
इन महलों में कोई मुनि न आने पाये
जो आज्ञा !

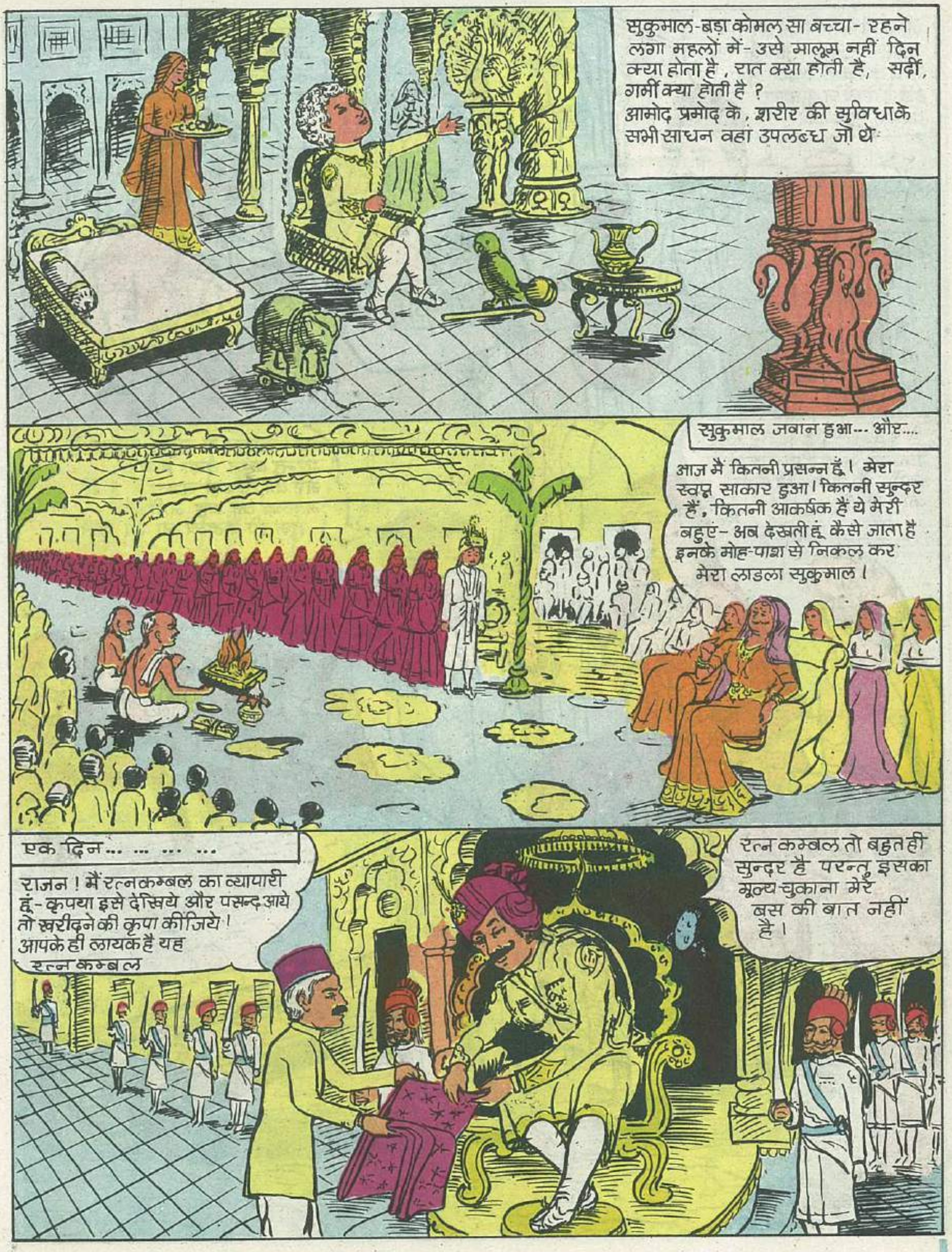
सुकुमाल-बड़ा कोमल सा बच्चा- रहने लगा महलों में- उसे मालूम नहीं दिन क्या होता है , रात क्या होती है, सर्दी, गर्मी क्या होती है ?
आमोद प्रमोद के , शरीर की सुविधाके सभी साधन वहां उपलब्ध जो थे
सुकुमाल जवान हुआ--- और....
आज मैं कितनी प्रसन्न हूँ। मेरा स्वप्न साकार हुआ। कितनी सुन्दर हैं, कितनी आकर्षक हैं ये मेरी बहुएं- अब देखती हूं कैसे जाता है इनके मोह-पाश से निकल कर मेरा लाडला सुकुमाल।
एक दिन... ... ...
राजन ! मैं रत्नकम्बल का व्यापारी हूं- कृपया इसे देखिये और पसन्द आये तो खरीदने की कृपा कीजिये ! आपके ही लायक है यह रत्न कम्बल
रत्न कम्बल तो बहुत ही सुन्दर है परन्तु इसका मूल्य चुकाना मेरे बस की बात नहीं है।

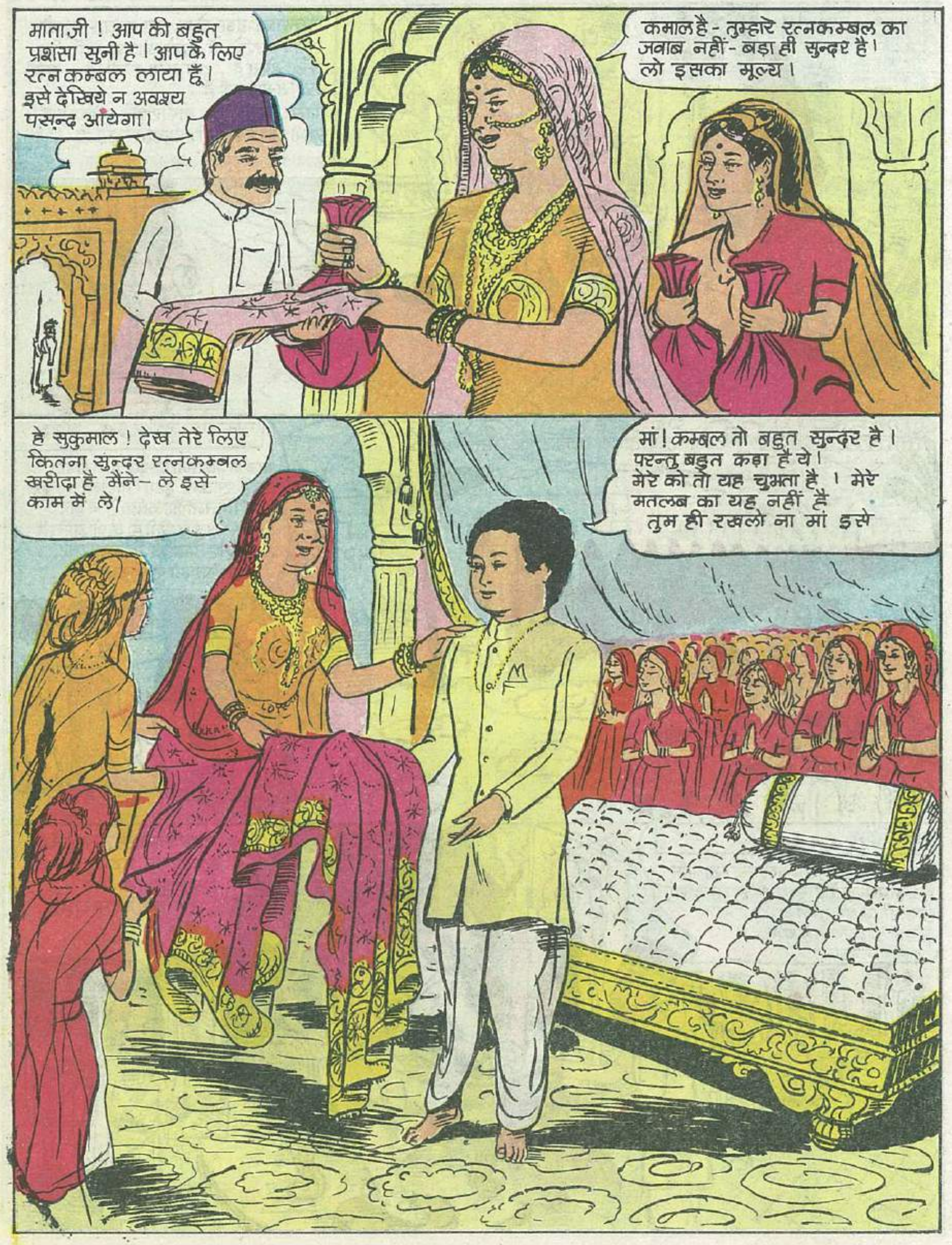
माताजी ! आप की बहुत प्रशंसा सुनी है। आप के लिए रत्न कम्बल लाया हूँ। इसे देखिये न अवश्य पसन्द आयेगा।
कमाल है - तुम्हारे रत्नकम्बल का जवाब नहीं - बड़ा ही सुन्दर है। लो इसका मूल्य।
हे सुकुमाल ! देख तेरे लिए कितना सुन्दर रत्नकम्बल खरीदा है मैंने- ले इसे काम में ले।
मां! कम्बल तो बहुत सुन्दर है। परन्तु बहुत कड़ा है ये। मेरे को तो यह चुभता है । मेरे मतलब का यह नहीं है तुम ही रखलो ना मां इसे

अब क्या करूं इस रत्न कम्बल का। हाँ। समझ मे आगया। क्यों न अपनी ३२ बहुओं की जूतियां बनवादूँ इस रत्न कम्बल की
एक दिन सुकुमाल की एक स्त्री सुदामा रत्न कम्बल से बनी जूती पहन कर महल के ऊपर चली गई और जूती निकाल कर वहां बैठ गई ....
चील जूती लेकर राजमहल की छत पर पहुंच गई। मांस समझ कर खाने लगी। जब खाई नहीं गई तो वहीं छोड़ कर उड गई... ... ...

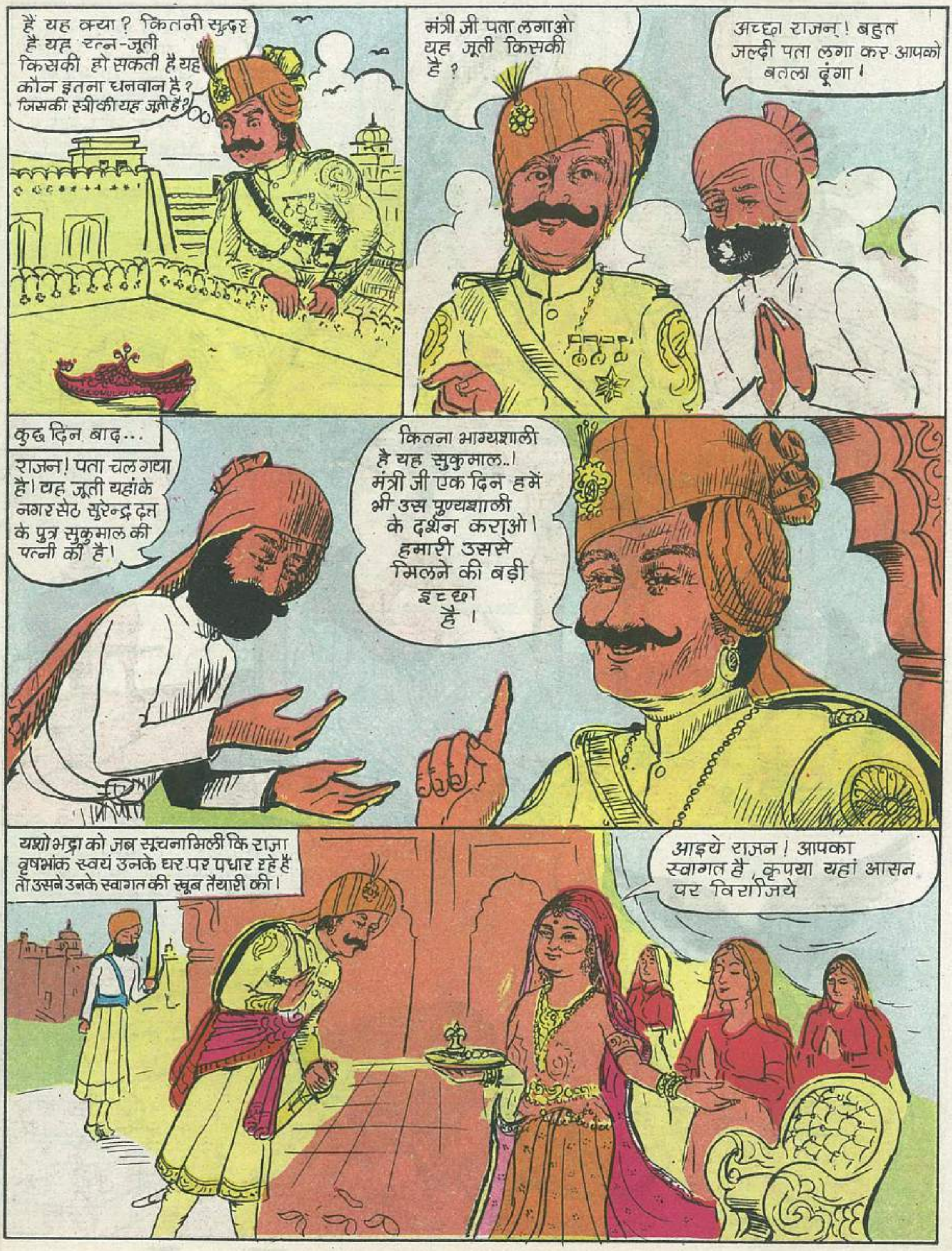
हैं यह क्या ? कितनी सुन्दर है यह रत्न-जूती किसकी हो सकती है यह कौन इतना धनवान है ? जिसकी स्त्री की यह जूती है ?
मंत्री जी पता लगाओ यह जूती किसकी है ?
अच्छा राजन् ! बहुत जल्दी पता लगा कर आपको बतला दूंगा।
कुछ दिन बाद...
राजन! पता चल गया है। वह जूती यहां के नगर सेठ सुरेन्द्र दत्त के पुत्र सुकुमाल की पत्नी की है।
कितना भाग्यशाली है यह सुकुमाल..। मंत्री जी एक दिन हमें भी उस पुण्यशाली के दर्शन कराओ। हमारी उससे मिलने की बड़ी इच्छा है।
यशोभद्रा को जब सूचना मिली कि राजा वृषभांक स्वयं उनके घर पर पधार रहे हैं तो उसने उनके स्वागत की खूब तैयारी की।
आइये राजन ! आपका स्वागत है, कृपया यहां आसन पर विराजिये

कहिये राजन ! कैसे पधारना हुआ ?
कुछ नहीं सेठानी। हम तो केवल आपके पुत्र के दर्शन करने आये हैं
आओ बेटा, यहां विराजो।
यह बालक सुकुमाल स्थिर होकर क्यों नहीं बैठ पा रहा है ? इसकी आखों में पानी क्यों बह रहा है?
राजा वृषभांक और सुकुमाल दोनो भोजन करने लगे
है यह क्या ? सुकुमाल एक एक चावल चुन कर क्यों खा रहा है ?

सेठानी जी! आपने मेरा स्वागत किया, भोजन कराया- मैं आपका आभारी हूँ। आपके पुत्र से मिलकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई परन्तु.....
परन्तु क्या ? राजन् !
सेठानी जी, ऐसा लगता है कि आपके पुत्र को कुछ रोग हैं, कृपया इनका इलाज अवश्य कराइयेगा।
क्या रोग हैं मेरे पुत्र को ? जरा मैं भी तो सुनूं।
मेरी दृष्टि में पहला रोग इसे यह है कि यह स्थिर आसन से नहीं बैठ सकता है।
राजन्! यह रोग नहीं। मेरा बेटा बहुत सुकुमार है, सदैव अत्यन्त कोमल शय्या पर ही सोता है और वैसी ही गद्दी पर बैठता है। आज मैंने मंगलस्वरूप आपके ऊपर कुछ सरसों डाली थी जिसके कुछ दाने इसके आसन पर भी गिर गये होंगे। वे ही सरसों के दानें मालूम होता है इसके चुभ रहे हैं इसलिए वह स्थिर होकर नहीं बैठ पा रहा है।

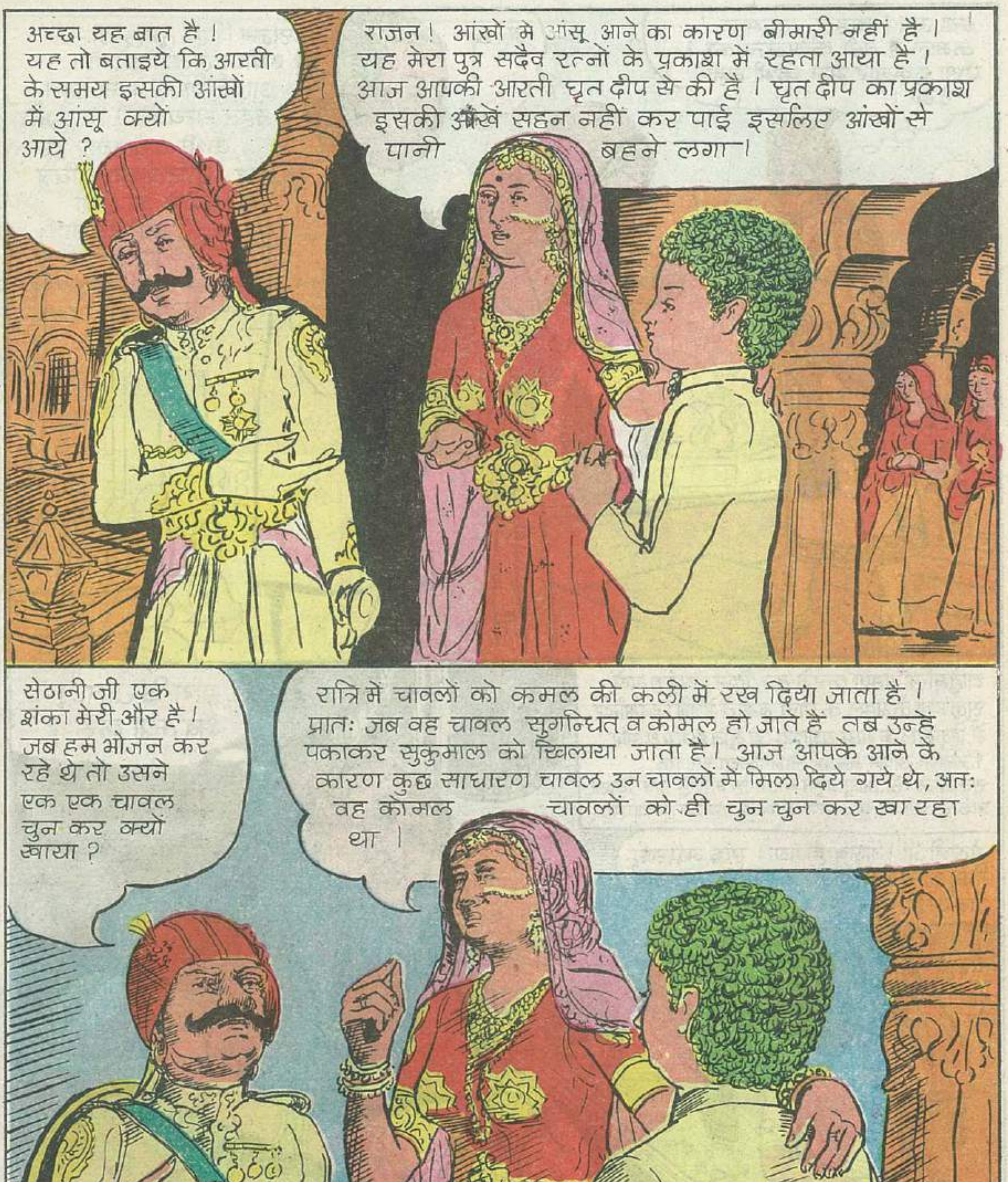
अच्छा यह बात है ! यह तो बताइये कि आरती के समय इसकी आंखों में आंसू क्यों आये ?
राजन ! आंखों मे आंसू आने का कारण बीमारी नहीं है । यह मेरा पुत्र सदैव रत्नों के प्रकाश में रहता आया है । आज आपकी आरती घृत दीप से की है । घृत दीप का प्रकाश इसकी आंखें सहन नहीं कर पाई इसलिए आंखों से पानी बहने लगा ।
सेठानी जी एक शंका मेरी और है ! जब हम भोजन कर रहे थे तो उसने एक एक चावल चुन कर क्यों खाया ?
रात्रि में चावलों को कमल की कली में रख दिया जाता है । प्रातः जब वह चावल सुगन्धित व कोमल हो जाते हैं तब उन्हें पकाकर सुकुमाल को खिलाया जाता है । आज आपके आने के कारण कुछ साधारण चावल उन चावलों में मिला दिये गये थे, अतः वह कोमल चावलों को ही चुन चुन कर खा रहा था ।

क्या खूब? वाह रे सुकुमाल। कमाल है तेरी कोमलता को। ऐसा सुकुमार मैंने कभी नहीं देखा।
अच्छा
राजन! यह तुच्छ भेंट स्वीकार कीजियेगा। आपके पधारने का बहुत बहुत धन्यवाद। फिर भी कभी पधारकर इस कुटिया को पवित्र करने की कृपा कीजियेगा।
चातुर्मास ग्रहण करने का दिन - पहुंच गये सुकुमाल के महल के पास बगीचे में बने जिन मन्दिर में, सुकुमाल के मामा यशोभद्र जो मुनि होगये थे और जिन्होंने अपने ज्ञान से जान लिया था कि सुकुमाल की आयु बहुत थोड़ी रह गई है अतः किसी प्रकार उसको कल्याण मार्ग में लगाना ही चाहिए।
हाय विधाता! अब क्या करूँ?
सेठानी जी! गजब होगया। एक नग्न साधु जिन मन्दिर में आकर बैठ गये हैं, क्या करूं अब उन्हें कैसे निकालूं?

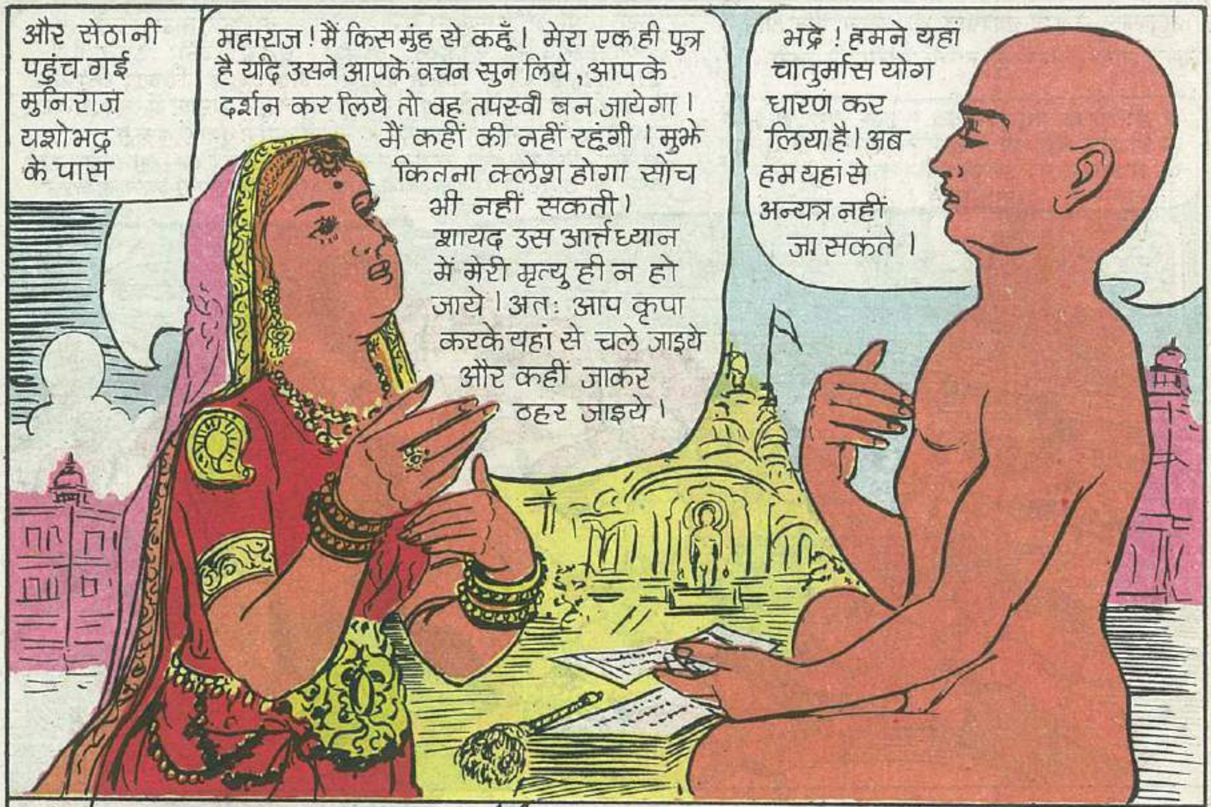
और सेठानी पहुंच गई मुनिराज यशोभद्र के पास
महाराज! मैं किस मुंह से कहूँ। मेरा एक ही पुत्र है यदि उसने आपके वचन सुन लिये, आप के दर्शन कर लिये तो वह तपस्वी बन जायेगा। मैं कहीं की नहीं रहूंगी। मुझे कितना क्लेश होगा सोच भी नहीं सकती। शायद उस आर्त्तध्यान में मेरी मृत्यु ही न हो जाये। अतः आप कृपा करके यहां से चले जाइये और कहीं जाकर ठहर जाइये।
भद्रे! हमने यहां चातुर्मास योग धारण कर लिया है। अब हम यहां से अन्यत्र नहीं जा सकते।

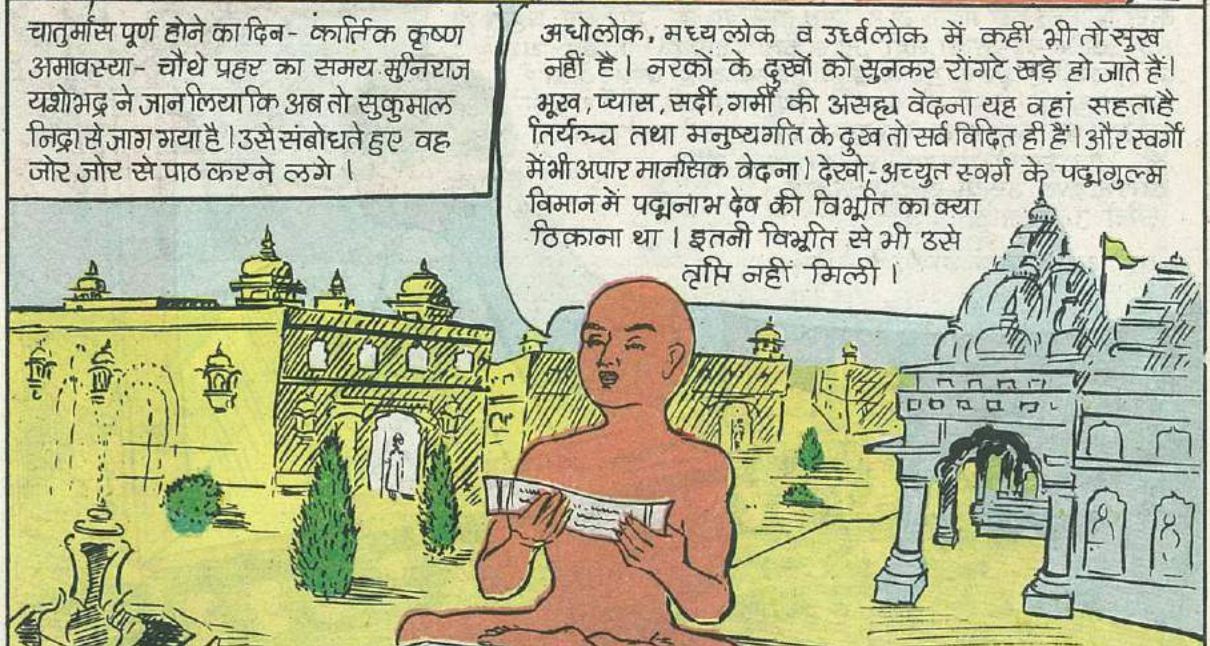
चातुर्मास पूर्ण होने का दिन- कार्तिक कृष्ण अमावस्या- चौथे प्रहर का समय मुनिराज यशोभद्र ने जान लिया कि अब तो सुकुमाल निद्रा से जाग गया है। उसे संबोधते हुए वह जोर जोर से पाठ करने लगे।
अधोलोक, मध्यलोक व उर्ध्वलोक में कहीं भी तो सुख नहीं है। नरकों के दुखों को सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी की असह्य वेदना यह वहां सहता है तिर्यञ्च तथा मनुष्यगति के दुख तो सर्व विदित ही हैं। और स्वर्गों में भी अपार मानसिक वेदना। देखो- अच्युत स्वर्ग के पद्मगुल्म विमान में पद्मनाभ देव की विभूति का क्या ठिकाना था। इतनी विभूति से भी उसे तृप्ति नहीं मिली।

सुकुमाल ने मुनि यशोभद्र के वचन सुने और उन्हें जाति स्मरण हो गया- विचारने लगे....
मैं ही तो था पद्मनाभ देव। जब वहां के भोगों से भी तृप्ति नहीं हुई तो यहां के भोग तो न कुछ के बराबर है। उनसे तृप्ति कहाँ। ये भोग निस्सार हैं, पराधीन हैं।
"ज्यों ज्यों भोग संयोग मनोहर मन बांछित जन पावें। तृष्णा नागिन त्यों त्यों डंके, लहर जहर की आवे॥" शरीर जिसको 'मैं' मान रखा है, मल, मूत्र, विष्टा की खान है, नश्वर है इसमें पोषण में सुख कहां? इस संसार में सुख की खोज करना मूर्खता नहीं तो क्या है? चारों गतियों में दुख ही दुख है। "जो संसार विषै सुख होता, तीर्थंकर क्यों त्यागे। काहे को शिव साधन करते, संयम सों अनुरागे॥" बस अब मैं जाग गया हूं! चलूं अपना कल्याण करने- परन्तु...
कैसे निकलूं इस महल से? सब द्वार बंद है, द्वार पर पहरा है कहीं से भी निकला नहीं जा सकता। अरे हाँ! दिखा- यह जो खिड़की है इससे ही निकला जा सकता है परन्तु कैसे? प्रश्न तो यह है। समझ में आया। क्यों न अपनी पत्नियों की साड़ियों को आपस में बांधकर एक रस्सी सी बना लूं और उसको खिड़की से बांधकर नीचे लटकाकर उसके सहारे सहारे नीचे उतर जाऊं-----. बस काम बन गया।

और सुकुमाल पहुंच गया मुनि यशोभद्र के चरणों में
नमोस्तु भगवन्
भद्र! तूने बहुत सुन्दर विचार किया... ... ...
...और हां, तेरी आयु भी अब केवल तीन दिन की बाकी है।
महात्मन! मैं आगया हूँ आपके चरणों में। भोगों में भूला हुआ था अपने को। अब जाग गया हूँ। अपने को पहचान गया हूँ। संसार, शरीर भोग निस्सार दीखने लगे हैं मुझे। कृपया दे दीजिये न मुझे भी मुनि दीक्षा ताकि मैं भी अपना कल्याण कर सकूं

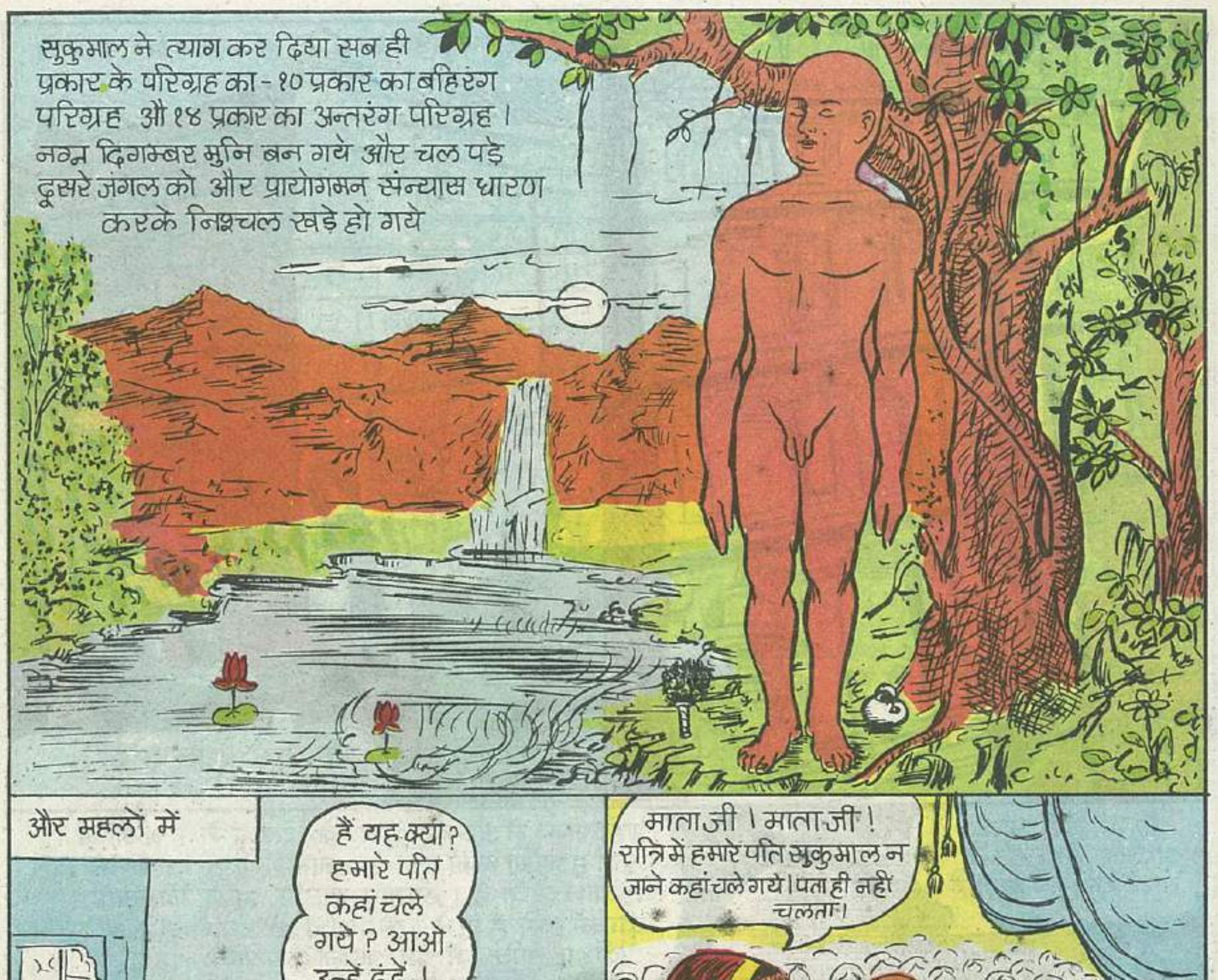
सुकुमाल ने त्याग कर दिया सब ही प्रकार के परिग्रह का - १० प्रकार का बहिरंग परिग्रह औ १४ प्रकार का अन्तरंग परिग्रह । नग्न दिगम्बर मुनि बन गये और चल पड़े दूसरे जंगल को और प्रायोगमन संन्यास धारण करके निश्चल खड़े हो गये
और महलों में
हैं यह क्या? हमारे पीत कहां चले गये? आओ उन्हें ढूंढें ।
माता जी । माता जी ! रात्रि में हमारे पति सुकुमाल न जाने कहां चले गये। पता ही नहीं चलता।
हा ! सुकुमाल...

चेतहोनेपर...
कहां गया मेरा पुत्र, मेरा सुकुमाल...... कितना सुकुमार है रे तू- क्या बीत रही.... होगी तुझ... पर...
है! यह क्या। यह साड़ियों की रस्सी इस खिड़की से..... क्यों बंधी है। समझी। अवश्य ही मेरा लाड़ला इन्हीं साड़ियों से बनी रस्सी से नीचे उतरा होगा।
हो न हो मेरा बेटा मुनि यशोभद्र के पास ही गया होगा। चलो वहां चलकर उसे ढूंढें
यहां भी तो नहीं है मेरा सुकुमार और न हैं यहां मुनिराज यशोभद्र

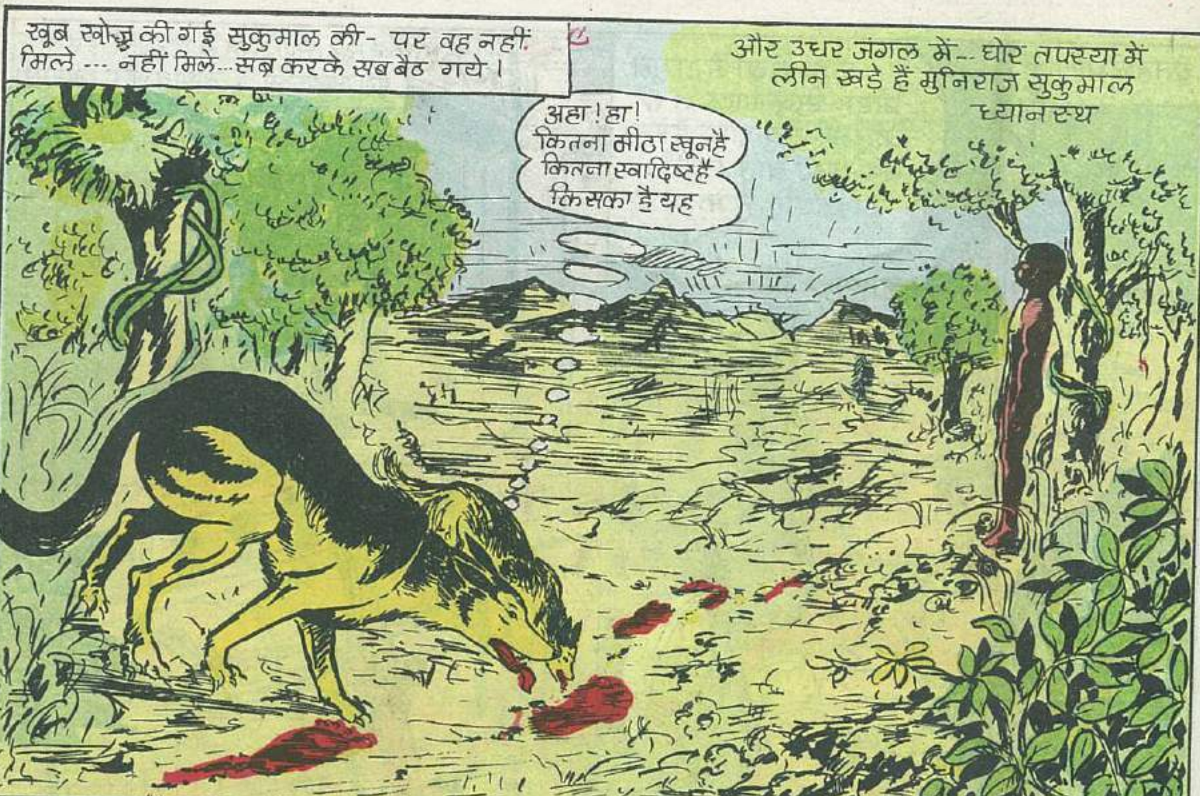
खूब खोज की गई सुकुमाल की- पर वह नहीं मिले --- नहीं मिले...सब्र करके सब बैठ गये।
और उधर जंगल में-- घोर तपस्या में लीन खड़े हैं मुनिराज सुकुमाल ध्यानस्थ
अहा! हा! कितना मीठा खून है कितना स्वादिष्ट है किसका है यह

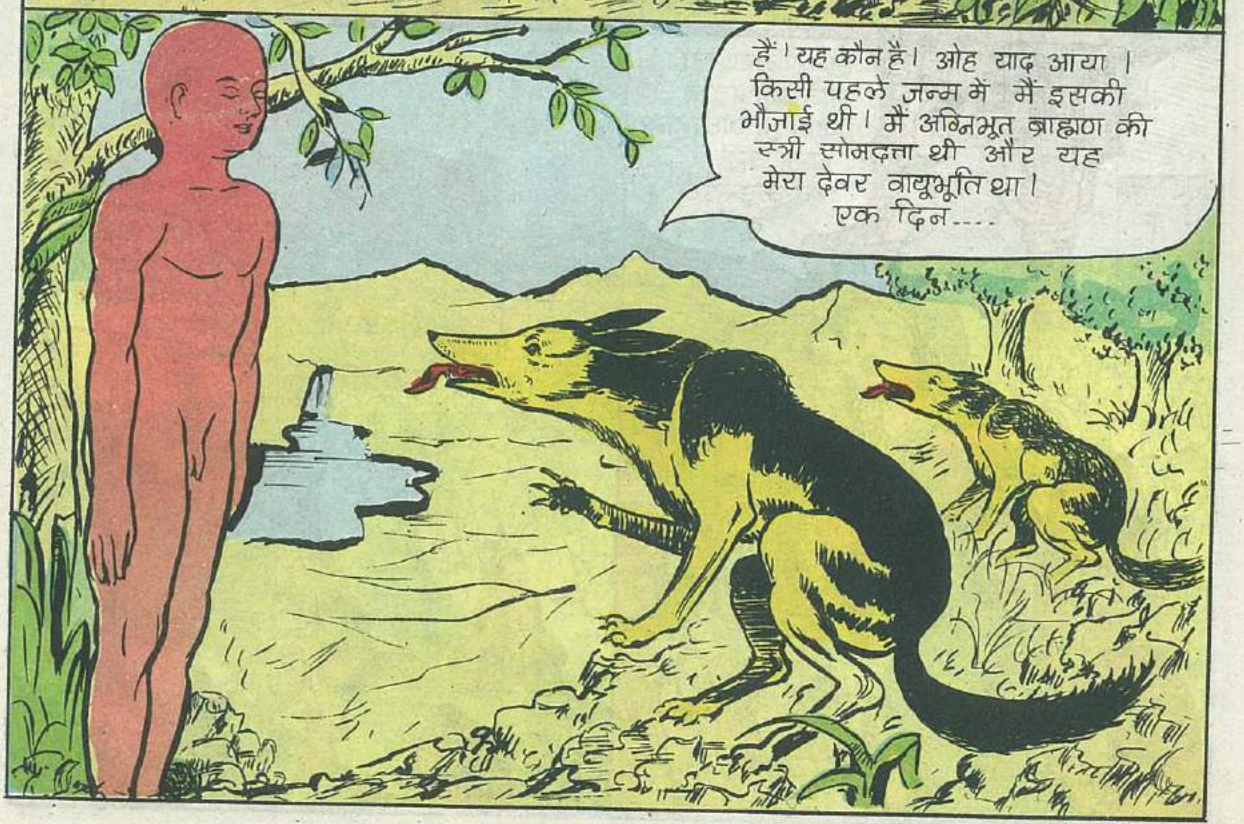
हैं! यह कौन है। ओह याद आया। किसी पहले जन्म में मैं इसकी भौजाई थी। मैं अग्निभूत ब्राह्मण की स्त्री सोमदत्ता थी और यह मेरा देवर वायुभूति था। एक दिन....

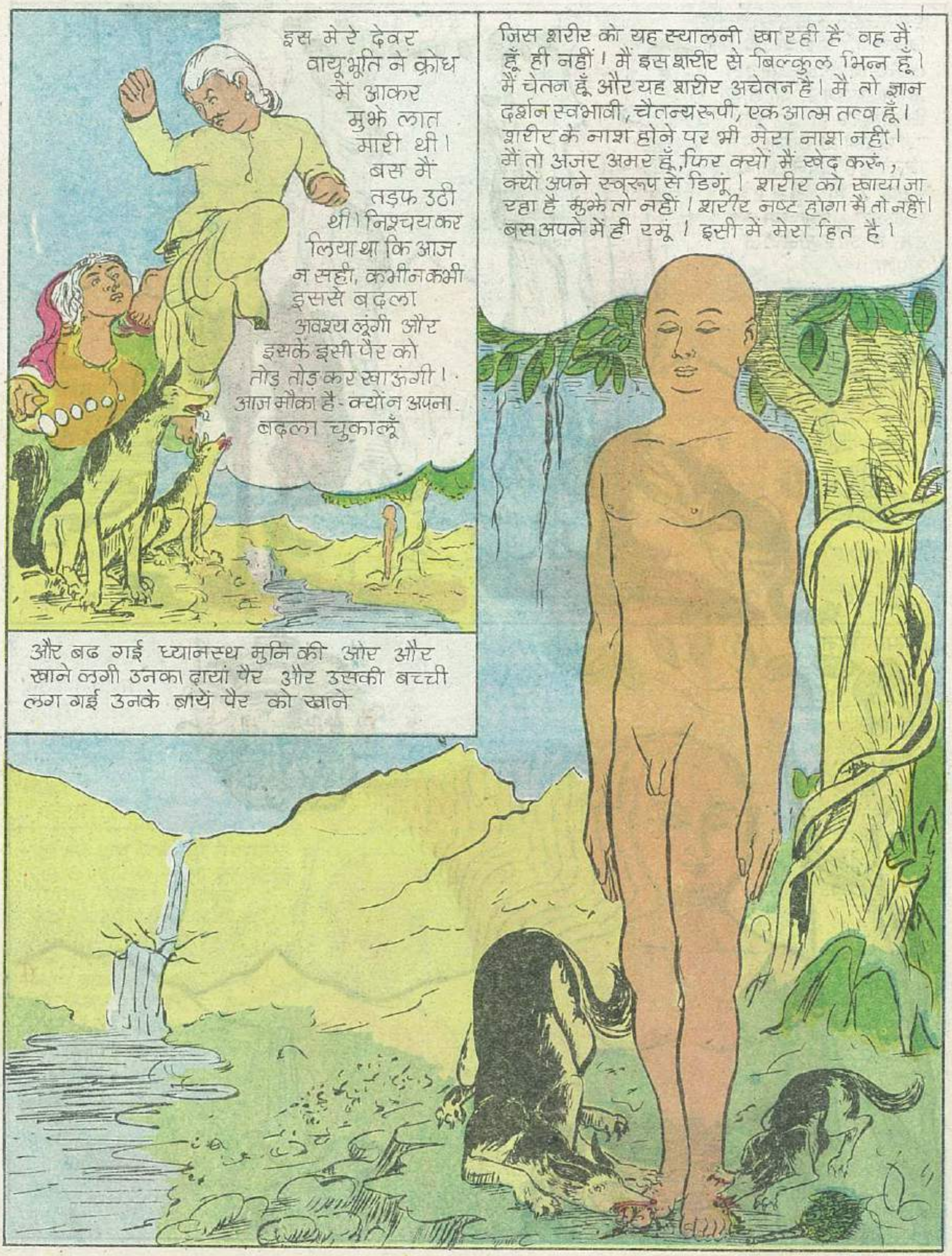
इस मेरे देवर वायुभूति ने क्रोध में आकर मुझे लात मारी थी। बस मैं तड़फ उठी थी। निश्चय कर लिया था कि आज न सही, कभी न कभी इससे बदला अवश्य लूंगी और इसके इसी पैर को तोड़ तोड़ कर खाऊंगी। आज मौका है - क्यों न अपना बदला चुकालूँ
जिस शरीर को यह स्यालनी खा रही है वह मैं हूँ ही नहीं। मैं इस शरीर से बिल्कुल भिन्न हूँ। मैं चेतन हूँ और यह शरीर अचेतन है। मै तो ज्ञान दर्शन स्वभावी, चैतन्यरूपी, एक आत्म तत्व हूँ। शरीर के नाश होने पर भी मेरा नाश नहीं। मैं तो अजर अमर हूँ, फिर क्यों मैं खेद करूं, क्यों अपने स्वरूप से डिगूं। शरीर को खाया जा रहा है मुझे तो नहीं। शरीर नष्ट होगा मैं तो नहीं। बस अपने में ही रमूं। इसी में मेरा हित है।
और बढ गई ध्यानस्थ मुनि की ओर और खाने लगी उनका दायां पैर और उसकी बच्ची लग गई उनके बायें पैर को खाने

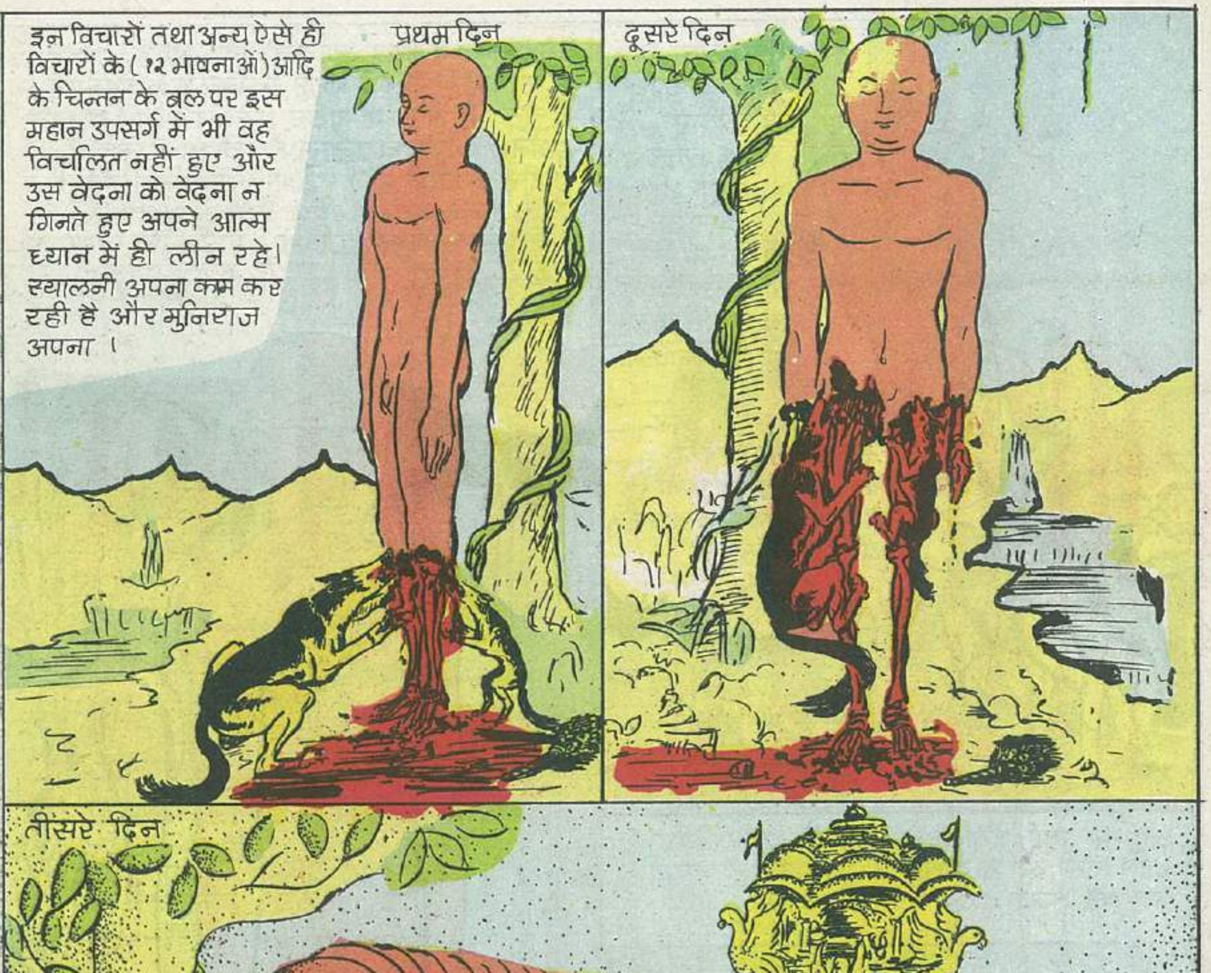
इन विचारों तथा अन्य ऐसे ही विचारों के (१२ भावनाओं) आदि के चिन्तन के बल पर इस महान उपसर्ग में भी वह विचलित नहीं हुए और उस वेदना को वेदना न गिनते हुए अपने आत्म ध्यान में ही लीन रहे। स्यालनी अपना काम कर रही है और मुनिराज अपना।
प्रथम दिन
दूसरे दिन
तीसरे दिन

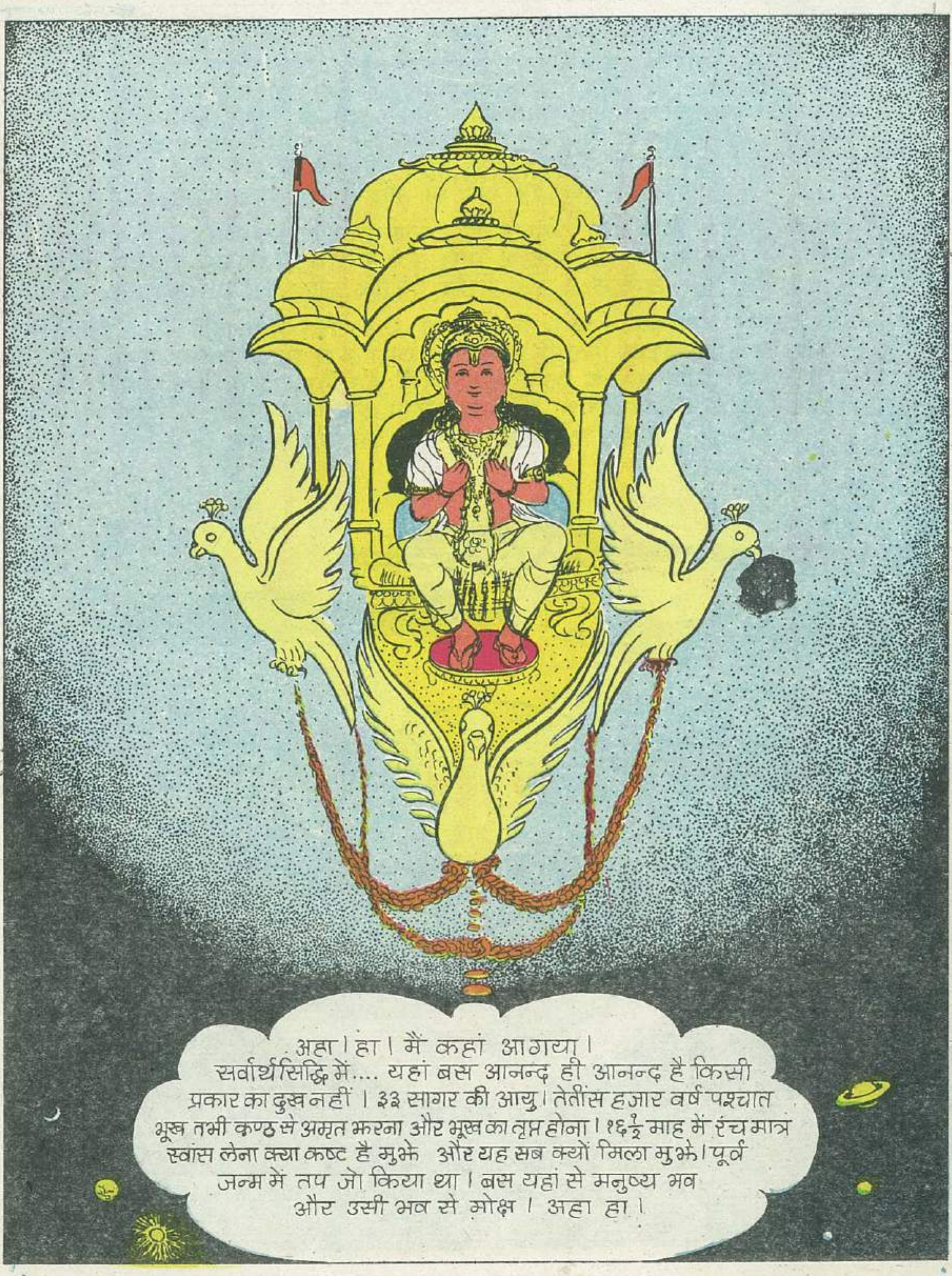

अहा। हा। मैं कहां आगया।
सर्वार्थसिद्धि में.... यहां बस आनन्द ही आनन्द है किसी
प्रकार का दुख नहीं। ३३ सागर की आयु। तेतींस हजार वर्ष पश्चात
भूख तभी कण्ठ से अमृत झरना और भूख का तृप्त होना। १६½ माह में रंच मात्र
स्वांस लेना क्या कष्ट है मुझे और यह सब क्यों मिला मुझे। पूर्व
जन्म मे तप जो किया था। बस यहां से मनुष्य भव
और उसी भव से मोक्ष। अहा हा।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त
लौकप्रिय प्रकाशन

जैन साहित्य प्रकाशन में एक नए युग का प्रारम्भ

आचार्य धर्म श्रुत ग्रन्थ माला से प्रकाशित
आधुनिक साहित्य

२. साधना और सिद्धि	१००/–
३. ज्ञान विज्ञान	२०/–
४. मंत्र महाविज्ञान	६०/–
५. ज्योतिष विज्ञान	६०/–
६. कर विज्ञान	३०/–
७. साधु परिचय	५०/–
८. वरांग चरित्र	५०/–
९. बोलती माटी	२५०/–
१०. आखन देखी आत्मा	६०/–
११. जैन रामायण सचित्र	२५/–
१२. भक्तामर सचित्र हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती	५००/–
१३. जैन चित्र कथाएं प्रति अंक	१५/–
१४. सुनो सुनाएं सत्य कथाएं प्रति अंक	२०/–
१५. आओ बच्चों गाये गीत, सचित्र	५०/–

प्राप्ति स्थान :-जैन मंदिर गुलाब वाटिका लोनी रोड, दिल्ली

फोन 05762-66074

अराधना

सौ० प्रेमलता पहाड़िया धमपत्नि श्री शिखर चन्द पहाड़िया
जयहिन्द इस्टेअ नं० २-ए, दूसरी मंजिल, भूलेश्वर, बम्मई - २

PAHARIA

- PAHARIA SILK MILLS PVT. LTD.
- SHIKHARCHAND AMITKUMAR
- PAHARIA INDUSTRIES
- PAHARIA TEXTILES COROPORATION
- PARAS SLIK INDUSTRIES
- SAPNA SILK MILLS
- SHIKHARCHAND PREMLATA PAHARIA
- PAHARIA TEXTILES MILS PVT. LTD.
- PAHARIA TEXTILES INDUSTRIES
- PAHARIA UDYOG
- PAHARIA SYNTHETICS
- VARUN ENTERPRISES
- ANAND FABRICS
- PANCHULAL NIRMALDEVI PAHARIA

Kaushal Silk Mills Pvt. Ltd.

FACTORY :
875, KAROLI ROAD, OP. PAHARIA COMPOUND BHIWANDI, DIST. THANE
TEL : 34243, 22819, 22816 FAX : (02522) 31987

REGD. OFF.
JAI HIND ESTATE NO. 2-A, 2ND FLOOR, DR. A.M. ROAD,
BHULESHWAR, BOMBAY- 400 002
TEL : 2089251, 2053085, 2050996 FAX : 2080231

Printed at : SAINANI OFFSET ✆ 2283885